पाठ्यचर्या / पाठ्यक्रम की आवश्यकता एवं महत्व

बालक के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखकर शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है। निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति का प्रमुख साधन पाठ्यचर्या को माना जाता है। बालक का विकास एक सीमा तक इस बात पर निर्भर करता है कि उसे दी जाने वाली शिक्षा की पाठ्यचर्या का निर्धारण किस प्रकार का है। शिक्षा के क्षेत्र में जितना महत्व बालक एवं शिक्षक का है उतना ही महत्व पाठ्यचर्या का भी है।

शिक्षा में पाठ्यचर्या की आवश्यकता एवं महत्व को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा समझा जा सकता है।

1. शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु।
2. शिक्षण सामग्री के निर्धारण हेतु।
3. शिक्षण विधि के निर्धारण हेतु।
4. शिक्षण - स्तर के निर्धारण हेतु।
5. समय एवं शक्ति के सदुपयोग हेतु।
6. पाठ्य - पुस्तकों की रचना का आधार।
7. छात्रों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन हेतु।
8. शिक्षा में गुणवत्ता लाने हेतु।
9. वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान की प्राप्ति हेतु।
10. वर्तमान समय की मांग की पूर्ति हेतु।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

पाठ्यचर्या को प्रभावित करने वाले कारक-

पाठ्यचर्या का निर्माण सदैव ही सामाजिक आवश्यकताओं को विचार में करते हुए ही किया जाता रहा है। यही कारण है कि कई ऐसे कारक हैं जो पाठ्यचर्या को प्रभावित करते हैं। यद्यपि ये कारक पाठ्यचर्या हेतु सही दिशा निर्देश भी देते हैं। पाठ्यचर्या को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं-

1. सामाजिक परिवर्तन
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीतियाँ
3. पाठ्यचर्या निर्माण समिति
4. शिक्षा प्रणाली
5. परीक्षा प्रणाली
6. शासकीय नीतियाँ
7. आधुनिक विचारधारा
8. आर्थिक परिवर्तन

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया